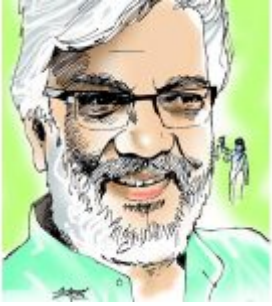


धुमक्कड़ी का आनन्द



कुदरत ने हम सब को धुमक्कड़ी करने के लिये ही दो पैर दिये हैं। पर ज्ञान विज्ञान और तकनीक के विस्तार ने पैर पैदल धुमक्कड़ी को पीछे धकेल कर सुबह शाम के एक रस पैदल टहलने की रस्म अदायी में बदल दिया है। एक जोड़ी मनुष्य के पैरों ने धरती के चप्पे चप्पे पर अपनी पद छाप छोड़ी है। गर्मी से तपता रेगिस्तान हो या हाड़तोड़ ठण्डक वाला हिमालय सब को धुमक्कड़ी करनेवालों ने अपने पैरों से नापा है। धुमक्कड़ी धरती मां की गोद में खेलते रहने जैसा आनन्ददायी अनुभव है जिसे हम सब अपनी जीवन यात्रा में निरन्तर पाते हैं। धनाजंगल तो धुमक्कड़ी का अंतहीन खजाना है। दरिया किनारा हो या पहाड़ी नदी के साथ कदमताल करने की आनन्ददायक अनुभूति को पैदल धुमक्कड़ी करने वाले ही अनुभव कर पाते हैं। आज की साधनों की अति वाली दुनिया में पैदल धुमक्कड़ी का चलन थोड़ा सिमटा है पर मिटा नहीं है। पैदल धुमने का रोमांच यह है कि हम हर क्षण नयी जमीन और हर क्षण नये आसमान के साथ आगे बढ़ते हैं।

जब से मनुष्य ने पहला कदम बढ़ाया तब से पैदल धुमने की कथा का आरम्भ होता है। मानव समाज में कई समूह तो ऐसे हैं जो एक जगह बसते ही नहीं धूमते ही रहना उनकी जिन्दगी है। मनुष्य मूलतः थलचर है पर पानी में तैरना वह सीख लेता है। तकनीक का विस्तार कर हम आकाश में आवागमन के कई साधनों के बल पर हवा में भी धुमक्कड़ी, भले ही हम साधारण मनुष्य भी क्यों न हों, फिर भी कर सकते हैं। इस तरह आधुनिक काल का मनुष्य थलचर, नभचर और जलचर तीनों श्रेणियों के प्राणियों की तरह धुमक्कड़ी का आनन्द उठाने की हैसियत अपने ज्ञान, विज्ञान और तकनीक के बल पर पा गया है।

धरती के धनधोर दुर्गम स्थल तो एक तरह से पैदल धुमने के लिये सुरक्षित रखें हैं। मन का संकल्प और पैरों की ताकत ही मनुष्य को दुर्गम स्थलों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार करवाने का अवसर और अनुभव सुलभ करवाती है। शायद इस धरती पर मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो भोजन नहीं मानसिक आनन्द के लिये धुमक्कड़ी को अपनाता है। धुमने को जीवन का ध्येय बनाने का सीधा साधा अर्थ है समूची धरती को अपना घर मानना। इसमें घर खरीदने, बनाने या लौटकर घर आने से मुक्ति है। दुनिया भर में हर जगह ऐसे लोग हैं जिनका अपना खुद का धुमक्कड़ी का दर्शन होता है। कुछ लोग आजीवन धुमक्कड़ी करते हैं। कुछ लोग पारिवारिक दायित्व से मुक्त होकर धुमक्कड़ी का दर्शन अपनाते हैं। जगत के विराट स्वरूप से प्रत्यक्ष साक्षात्कार करने के लिये धुमक्कड़ी का रास्ता चुनते हैं। वैसे तो जन्म से मृत्यु तक की यात्रा भी धुमक्कड़ी है। पर जीवन की धुमक्कड़ी में आजीवन धुमक्कड़ी का आनन्द ही अनन्त है।

धूमने की शुरुआत तरूणावस्था में हो जाय तो धुमक्कड़ी का रोमांच बढ़ जाता है। महात्मा गांधी के सहयोगी काका साहेब कालेलकर का कहना था कि सारे दुर्गम स्थानों को युवा अवस्था में ही धुम लेना चाहिये। जब तन कमजोर होता है तो धुमक्कड़ी का मन होने पर भी तन की कमजोरी धूमने फिरने पर दुविधाओं को मन में जन्म देती है। जीवन का सत्य भी यहीं है कि युवा अवस्था में मनुष्य का मन हर चुनौती के लिये तैयार होता है या चुनौती को अवसर मानता है। तरूणावस्था एक तरह से वरूणावस्था ही है तूफान की तरह वेगवान और कभी भी कहीं भी गतिशील होने को तत्पर। युवा मन और तन जीवन का सबसे ऊर्जावान कालखण्ड है जिसमें जिन्दगी का जोड़ बाकी गुणा भाग अजन्मा होता है। इसी से शायद जोश में होश खोने जैसी बातों का जन्म हम सबके लोक जीवन में आया।

मानव की जिज्ञासा ने धूमने फिरने को जी भरके पाला पोसा है। बहुत पहले के कालखण्ड से धूमने फिरने वाले को ज्ञानी और अनुभवी समझा जाता रहा है। हमारी इस धरती के चप्पे चप्पे में फैली विविधतायें मनुष्य को धुमक्कड़ बनने का हर काल में आमंत्रण देती रहती हैं।

आज की साधनों की अतिवाली जिन्दगी में बहुत कम लोग तन और मन के साधन के बल पर धुमक्कड़ी की हिम्मत जुटा पाते हैं। आज हम सबका मानस साधन सम्पन्नता वाले पर्यटन की ओर ज्यादा झुका हुआ रहता है। कहां रहेंगे? कहां और क्या खायेंगे? कैसे जायेंगे? जैसे सवाल प्राथमिक चिन्ता हो जाते हैं और धुमक्कड़ी का प्राकृतिक आनन्द गौण हो जाता है। हमारी धरती हमारे जीवन की रखवाली है। धरती पर जीवन की सारी अनुकूलताये उपलब्ध होने से ही धरती के हर हिस्से में मानव सभ्यता का विस्तार हुआ। पर आज हम व्यवस्था की अनुकूलता के आदि होते जा रहे हैं। जिसका प्रभाव हमारे मन और तन दोनों पर बहुत गहरे से हुआ है।

जीवन एक यात्रा है। जीवन एक अनुभव है। जीवन एक खुली चुनौती है। जीवन हवा है, पानी है, मिट्टी है, वनस्पति है, जैव विविधता का अनोखा विस्तार है, जिसमें हर जीवन के लिये जीवन्त बने रहने की भरपूर गुंजाइश है। हमने हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिये जो जो इंतजाम रहने, सोने, खाने और जीने के लिये जुटाये हुए हैं। हममें से अधिकांश उन सबके इतने अधिक आदि हो गये हैं की तन और मन का साधन ही गौण हो गया।

आज के काल खण्ड में हमारे सोच में विकास, विस्तार और बदलाव का एकमात्र अर्थ व्यवस्थागत संसाधनों की अंतहीन जकड़बन्दी होता जा रहा है। आज हममें से किसी के पास यदि सायकल, मोटर सायकल या स्कूटर, कार या जीप, बस या रेल की सुविधा उपलब्ध नहो तो हम अपने पास कोई साधन उपलब्ध न होने की उदधोषणा कर कहीं भी आने जाने में अपनी असमर्थता व्यक्त करने में लजाते नहीं हैं, और सब इस तर्क को सहर्ष स्वीकार भी कर लेते हैं। यदि आज कोई अपने पैरों की ताकत से जीना चाहें तो लोग उसे साधन हीन मनुष्य मान कर दिया का पात्र समझने लगते हैं।

भूदान का विचार लेकर सारे देश में सतत एक दशक से भी ज्यादा समय तक पदयात्रा करने वाले संत विनोबा ने आदिशंकराचार्य के बारे में लिखा है कि शंकराचार्य दो बार कुल भारत भर में धूमे। ३२ साल की उम्र तक उन्होंने लगातार काम किया। ग्रंथ लिखे, चर्चा की, समाज की सेवा की और सर्वत्र संचार किया। भारत के एक कोने में, केरल में जन्म हुआ और हिमालय में समाधि ली और अनुभव किया कि

अपनी मातृभूमि में ही हूँ। उनके खाने के लिये आधार क्या था? झोली। कहते थे-“भिक्षा मांगकर खाओ, क्षुधा को व्याधि समझो और स्वादिष्ट अन्न की आशा मत रखो। जो सहज प्राप्त होगा, उसमें संतोष, समाधान मानो।” यही था शंकराचार्य का जीवनाधार! और यहीं उस तन और मन की भी असली ताकत है जिसके बल पर वह जीवन के प्रवाह को घुमक्कड़ी का आनन्द बना देता है।

प्रस्तुत है सफ़र पर कुछ चुनिंदा शेर

११ ११११ १११ ११११ १११ ११ ११
११ १ १११ १११ ११ ११ ११ ११

-राही मासूम रजा

११११ १११ १११ ११ ११११ ११ ११ १११ ११ १११
१११ १११ ११११ १११ १११ ११ ११११ १११ ११ १११

-निदा फ़ाजली

१ १११११११११ ११ १ ११ ११११११११ ११ १११११ १११
१११ ११११ ११ ११ ११ ११-११११ ११ १११११ १११

-अहमद फ़राज़

१११ १११११ ११ १११११ ११ ११ १११ १११ १११
११११ ११११ ११ ११११ १११११११११ ११ ११११

-साहिल सहरी नैनीताली

११११ ११११ ११ ११११ १११११११११ ११ १११ १११
११ १११११ ११ ११ १११ ११११ ११ ११११ १११ १११

साक़ी फ़ारुकी

११ ११ ११ ११ ११११ ११ १११११ ११ १११११११ ११
१११११ ११ ११११ ११ १ १११ ११ ११११ ११ ११११

-जावेद अख़्तर

११११ १११ १११ ११ १११११ ११ १११ १११
११ ११ ११११ ११ १११ १११ १११ ११११ १११

-आबिद अदीब

अनिल त्रिवेदी

स्वतंत्र लेखक और अभिभाषक

त्रिवेदी परिसर 304/2 भोलाराम उस्ताद मार्ग,

ग्राम पिपल्याराव, ए बी रोड़

इन्दौर मप्र

Email aniltrivedi.advocate@gmail.com

Mob. 9329947486